2 सितम्बर 2011, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J.P.C / FN-61 / 2009-11

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रात: 6.40 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 34, अंक : 11 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

सितम्बर (प्रथम), 2011 (वीर नि. संवत्-2537) सह-सम्पादक : पण्डित संजीवकुमार गोधा वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

स्नातक परिषद की महाराष्ट्र प्रान्तीय कार्यकारिणी का -

प्रथम सम्मेलन संपन्न

नवागढ-परभणी (महा.) : यहाँ पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद जयपुर द्वारा स्नातक परिषद की नवगठित महाराष्ट्र प्रान्तीय कार्यकारिणी का प्रथम सम्मेलन अतिशय क्षेत्र नवागढ में दिनांक 7 अगस्त को अत्यन्त हर्ष और उत्साह के साथ संपन्न हुआ।

प्रात: 9 बजे सामूहिक जिनेन्द्र पूजन के पश्चात् सम्मेलन का उद्घाटन क्षेत्र के मंत्री मा. माणिकचंदजी तर्टे की अध्यक्षता में तथा श्री निलेश माणिकचंदजी विनायके के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। उद्घाटन के अवसर पर डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर द्वारा प्रेरक व्याख्यान हुआ।

इस सम्मेलन में महाराष्ट्र में सुचारु रूप से तत्त्वप्रचार करने में स्नातकों की भूमिका एवं छात्रों की आजीविका के समाधान के संबंध में विचार विमर्श हुआ। साथ ही प्रतिवर्ष दो बार सम्मेलन के रूप में सभी स्नातकों ने एकत्रित होकर आपस में मिलने का निर्णय लिया।इसके अन्तर्गत इसका दूसरा सम्मेलन अ.भा.जैन युवा फैडरेशन शाखा औरंगाबाद की ओर से औरंगाबाद एवं तृतीय सम्मेलन हिंगोली में करने का सर्वसम्मति से निर्णय भी लिया गया।

इस सम्मेलन में केन्द्रीय कार्यकारिणी के सदस्य डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर के अतिरिक्त महाराष्ट्र प्रान्त की कार्यकारिणी के मंत्री पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, सहमंत्री पण्डित हेमन्तजी बेलोकर डासाला, संगठन मंत्री पण्डित अनंतजी विश्वम्भर, उपाध्यक्ष पण्डित जिनचंद्रजी आलमान हेरले एवं पण्डित अमोलजी सिंघई हिंगोली के अलावा पण्डित कीर्तिजय गोरे, पण्डित उमाकांतजी बंड आदि 39 स्नातकों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

संपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन श्री आलोकजी शास्त्री कारंजा एवं श्री अशोकजी वानरे सेलू द्वारा किया गया।

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में
पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा आयोजित

चौदहवाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

(रविवार, २ अक्टूबर से मंगलवार, ११ अक्टूबर २०११ तक)

आपको सूचित करते हुये अत्यंत हर्ष हो रहा है कि राजस्थान की प्रसिद्ध गुलाबी नगरी जयपुर में आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सदुपदेश से संस्थापित ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित होनेवाले आध्यात्मिक शिविरों की शृंखला में चौदहवाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर इस वर्ष रविवार, दिनांक 2 अक्टूबर से मंगलवार दिनांक 11 अक्टूबर 2011 तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।

इस शिविर में लोकप्रिय प्रवचनकार डॉ. हुकमंचदजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना आदि अनेक विद्वानों का प्रवचनों, कक्षाओं एवं तत्त्वचर्चा के माध्यम से लाभ मिलेगा।

विशेष कार्यक्रमों के अन्तर्गत दिनाँक 6 अक्टूबर को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के पात्रों का अभिनन्दन समारोह एवं दिनाँक 4 अक्टूबर को श्री टोडरमल स्नातक परिषद् का उत्तरप्रांतीय सम्मेलन होगा।

आप सभी को शिविर में सपरिवार इष्ट मित्रों सहित पधारने हेतु हमारा भाव भीना आमंत्रण है।

इस शिविर में पधारने वाले सभी मुमुक्षु भाइयों से निवेदन है कि वे अपने आने की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय के पते पर अवश्य भेजें ताकि उनके भोजन एवं आवास की समुचित व्यवस्था की जा सके।

श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में होने वाले पंचकल्याणक हेतु -

बुंदेलखण्ड मे पंचकल्याणक आमंत्रण रथ प्रवर्तन संपन्न

बुंदेलखण्ड में दिनांक 9 अगस्त से 18 अगस्त तक पंचकल्याणक आमंत्रण रथ प्रवर्तन संपन्न हुआ। यह रथ ग्वालियर से प्रारम्भ होकर ललितपुर, बानपुर, टीकमगढ, घुवारा, द्रोणगिरी, बकस्वाहा, शाहगढ, जबेरा, दमोह, अभाना, दलपतपुर, बण्डा, खडैरी, सोनागिर, गढाकोटा होते हुए गौरझामर पहुँचा। प्रत्येक स्थान पर रथ का धूमधाम के साथ स्वागत हुआ व नगर भ्रमण कराया गया।

सभी स्थानों पर पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली के प्रवचनों का लाभ मिला। इनके अतिरिक्त पण्डित सुमितजी शास्त्री छिन्दवाड़ा एवं पण्डित सौरभजी शास्त्री खड़ैरी भी रथ में सम्मिलित थे।

सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरी पर रथ का स्वागत छतरपुर के कलेक्टर श्री राहुलजी जैन द्वारा हुआ। प्रत्येक जगह पर पंचकल्याणक का बड़े उत्साह व भक्तिभावपूर्वक आमंत्रण दिया गया। सभी स्थानों की समाज ने रथ का भरपूर स्वागत किया तथा पंचकल्याणक महोत्सव में जयपुर आने हेतु कलशों एवं आवास आदि की बुकिंग भी करायी।

सम्पादकीय – 63

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा– १०१

विगत गाथा में निश्चयनय एवं व्यवहारनय से कालद्रव्य का कथन किया है।

अब प्रस्तुत गाथा में काल के 'नित्य' और 'क्षणिक' – ऐसे दो विभागों का कथन करते हैं।

मूल गाथा इसप्रकार है –

कालो त्ति य ववदेसो सब्भावपरूवगो हवदि णिच्चो।
उप्पण्णप्पद्धंसी अवरो दीहंतरट्ठाई ।।१०१।।

(हरिगीत)

काल संज्ञा सत प्ररूपक नित्य निश्चय काल है।
उत्पन्न-ध्वंसी सतत् रह व्यवहार काल अनित्य है।।१०१।।

'काल' ऐसा व्यपदेश (कथन) सद्भाव का प्ररूपक है, इसलिए निश्चयकाल नित्य है। दूसरा व्यवहार काल उत्पन्न-ध्वंसी है। वह व्यवहारकाल क्षणिक होने पर भी प्रवाह की अपेक्षा दीर्घस्थिति का भी कहा जाता है।

टीकाकार आचार्य अमृतचन्द्र कहते हैं कि काल के नित्य व क्षणिक – ऐसे दो विभाग हैं। ''यह काल है, यह काल है'' ऐसा करके जिस द्रव्य विशेष का कथन किया जाता है, वह द्रव्य अपने सद्भाव को प्रगट करता हुआ नित्य है तथा जो उत्पन्न होते ही नष्ट होता है वह व्यवहार काल उसी द्रव्य विशेष की 'समय' नामक पर्याय है; परन्तु वह क्षणिक होने पर भी अपनी संतति की दृष्टि से उस दीर्घकाल तक रहने वाला कहने में दोष नहीं है। इसी कारण आवलिका, पल्योपम, सागरोपम इत्यादि व्यवहारकाल कहने का भी निषेध नहीं है।

इसी गाथा के भाव को कवि हीराचन्दजी काव्य में कहते हैं :–

(सवैया इकतीसा)

'काल' इन दोइ आंक मध्यवाची अरथ मैं,
निहचै सरूप जानौ नित्यकाल चित है।
उत्पन्न होइ नासैं द्रव्य का विषै भासै,
समय नाम पर्याय-काल सो अनित्य है।।
सोई काल छिनभंगी संतति नय अंगी है,
दीर्घ लौं सथाइ-पल्य-सागर उदित है।
निहचै है काल नित्य द्रव्यरूप मित तातैं,
विवहार छिन साधै सोई समचित है।।४३७।।

(दोहा)

अपने सहज सुभाव सौं, रहै सुनिहचै होइ।
पर की छाया जहँ परै, तहँ विवहार विलोइ।।४३८।।

कवि कहते हैं कि 'काल' नाम निश्चय काल का सूचक है, अस्तिवाचक है तथा नित्य है और कालद्रव्य पर्याय से अनित्य है। पल्य, सागर आदि व्यवहार काल है। निश्चय काल अविनाशी है तथा व्यवहार काल क्षणिक है।

इसी भाव को गुरुदेव श्री कानजीस्वामी ने व्याख्यान में कहा है कि काल शब्द निश्चयकाल का सूचक है। जिसतरह जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म द्रव्य हैं, उसीतरह 'काल' भी द्रव्य है, काल के असंख्य कालाणु हैं।

व्यवहार काल में सबसे सूक्ष्म 'समय' है। वह एक समय की अवस्था है। वह उत्पन्न-ध्वंसी है तथा निश्चय कालाणु की पर्याय है। उन्हें 'समय' की भूत, भविष्य व वर्तमानरूप परम्परा से कहा जाय तो उससे नक्की होता है कि निश्चयकाल अविनाशी है तथा व्यवहारकाल क्षणिक हैं।

काल वस्तु है, पर उसके काय नहीं हैं; क्योंकि वह एक प्रदेशी है तथा काय बहुप्रदेशी होती है। कालद्रव्य में रुखापन व चिकनापन नहीं है। इसकारण वह एक प्रदेशी ही है, फिर भी सागरोपम, पल्योपम कहने की अपेक्षा से भी कालद्रव्य का कथन होता है। ●

पण्डित कैलाशचंद जैन के जीवन पर मंगलायतन टाइम्स द्वारा –

विशेषांक प्रकाशन की योजना

परमोपकारी गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के चरण सानिध्य में रहकर उनसे प्राप्त वीतरागी तत्त्वज्ञान को जिन्होंने सम्पूर्ण देश में कक्षा पद्धति से प्रचारित एवं प्रसारित किया है; ऐसे आत्मार्थी विद्वान् पण्डित कैलाशचंद जैन (बुलन्दशहरवाले) अलीगढ, अपने वर्तमान जीवन के 98 वर्ष पूर्ण कर चुके हैं। शारीरिक अस्वस्थता, सुनने एवं देखने की शक्ति की क्षीणता के बावजूद वीतरागी तत्त्वज्ञान को अनवरत साधना जिनके अन्त:स्थल एवं जिव्हा पर आज भी देखी जा रही है – ऐसे पण्डितजी की, गुरुदेवश्री को समर्पित जीवनशैली को आगामी पीढियों तक पहुँचाने के उद्देश्य से मंगलायतन टाइम्स का एक विशेषांक प्रकाशित करने का निर्णय लिया है।

यदि आपके पास पण्डित कैलाशचंदजी से सम्बन्धित कोई भी संस्मरण, प्रेरणास्पद घटना, फोटोग्राफ आदि हों तो आप प्रकाशनार्थ हमें भेज सकते हैं। साथ ही पण्डितजी के प्रति अपने, अपनी संस्था के उपकारभाव भी प्रेषित कर सकते हैं। प्रकाशनोपरान्त आपकी सामग्री आपको वापस कर दी जाएगी।

इस विशेषांक को अधिक उपयोगी बनाने हेतु अपने सुझावों से भी लाभान्वित करने का अनुरोध है। ज्ञातव्य है कि इस विशेषांक का सम्पूर्ण प्रकाशन खर्च पण्डितजी के परिवारजनों द्वारा प्रदान किया गया है।

संपर्क सूत्र : 1.डाक द्वारा – देवेन्द्रकुमार जैन, सम्पादक, मंगलायतन टाइम्स, तीर्थधाम मंगलायतन, आगरा-अलीगढ मार्ग, सासनी- 204216 (उ.प्र.); **2. कोरियर सर्विस द्वारा –** 'विमलांचल', हरिनगर, आगरा रोड़, अलीगढ - 202001 (उ.प्र.)

अतीत के झरोखे से

26 दिसम्बर 1990 से 2 जनवरी 1991 तक हुये टोडरमल स्मारक जयपुर के प्रथम पंचकल्याण के बारे में प्रत्यक्ष दर्शियों के मनोगत (वीतराग-विज्ञान, फरवरी-1991 अंक से साभार)

हम तो स्वर्ग में जाकर आये हैं

जैन-अध्यात्म स्टडी सर्किल घाटकोपर-बम्बई से पधारे भाई **(चमनलाल डी. वोरा (प्रमुख), जयंतीलाल पी. कोठारी (उपप्रमुख), हंसमुखभाई एम. मोदी (मंत्री), विजयभाई एम. बोटादरा (सहमंत्री), दौलतभाई एल. भायाणी (कोषाध्यक्ष), दीपकभाई जी. गोसलिया (सहकोषाध्यक्ष) और जैन-अध्यात्म स्टडी सर्किल घाटकोपर-बम्बई कमेटी के सभी सदस्य)** लिखते हैं-

''वहाँ की सब सुविधायें देखते ही हम लोग मार्ग की सब कठिनाइयाँ भूलने लगे। मनुष्यलोक में से स्वर्गलोक में प्रवेश पाते ही जीव को जो भाव होता है, वैसा भाव सबको होने लगा। प्रतिष्ठाचार्य श्री अभिनन्दनकुमारजी एवं उनके सहयोगी श्री अभयकुमारजी आदि के द्वारा विधिपूर्वक की गई प्रतिष्ठा विधि और प्रसंग के अनुरूप राजा-रानी व इन्द्र-इन्द्राणी के संवाद बीच-बीच में यथायोग्य गीत-संगीत एवं प्रसंग के अनुरूप डॉ. भारिल्ल साहब के प्रवचन; श्री युगलजी, श्री उत्तमचंदजी जैसे विद्वानों के तत्त्व से भरे प्रवचन, भजन मंडली की भक्तियाँ, बोलियाँ लेनेवालों का उत्साह इत्यादि जो कुछ देखा वह स्वप्न नहीं, सत्य था।

इस महोत्सव में इतने सारे लोगों की भीड़ थी कि हम एक-दूसरे से सुबह बिछुड़ जाते थे तो शाम को ठहरने की जगह पर ही मिल पाते थे। स्टेज के नजदीक (100 फुट के अन्दर) जगह पाने के लिए एक घण्टे पहले पहुँचना पड़ता था, फिर भी व्यवस्था इतनी सुन्दर थी कि क्लोज सरकिट टी.वी. के माध्यम से दोनों तरफ (6-6 वीडियो कैमरा इस्तेमाल करने से) बहुत पीछे वाले लोग भी अच्छी तरह लाभ ले सकते थे। माइक की व्यवस्था भी उत्तम प्रकार की थी और पांडाल के बाहर दूर भोजनकक्ष तक प्रवचन सुनाई देता था। भोजन कक्ष में भी काफी भीड़ होने पर भी कोई अव्यवस्था नहीं थी। गुजराती, हिन्दी व शुद्ध भोजन के अलग-अलग चार चौके चलते थे। एक हजार टेन्टों के आदिनाथ नगर में कोई टेन्ट खाली नहीं था।

आयुर्वेदिक, एलोपैथिक और होम्योपैथिक - सभी प्रकार की चिकित्सा व्यवस्था उत्तम प्रकार की थी। स्टेडियम से धर्मशालाओं में ठहरने के स्थल तक आने-जाने के लिए बसों की जो व्यवस्था की गई थी, ऐसी व्यवस्था कोई सोच भी नहीं सकता। आजू-बाजू महावीरजी, पदमपुरा, तिजारा इत्यादि की तीर्थयात्रा के लिये भी बसों की काफी सुविधा की गई थी। पंचकल्याणक महोत्सवों का बहुत सारे लोगों ने बहुत जगह लाभ लिया होगा; लेकिन यह महोत्सव हरएक को जीवन का यादगार प्रसंग बना रहेगा। पिछले कई सालों में न पड़ी हो - ऐसी सर्दी का अनुभव होते हुए भी रात्रि को देर तक लोग प्रोग्राम में से हटते नहीं थे। प्रोग्राम सबको ऐसा पकड़ के रखता था कि पंडाल के बाहर इतनी ठंडी है, यह किसी को ख्याल में भी नहीं आता। इतने बड़े महोत्सव के बारे में क्या-क्या लिखें और क्या-क्या नहीं लिखें ? ऐसा सुन्दर और सफल आयोजन तब ही हो सकता है, जब एक अच्छी निष्ठावान कार्यकर्ताओं की टीम महिनों पहले से कार्यरत हो और उसका कुशल संचालन हो। केवल पैसे खर्च करने से ऐसा भव्य आयोजन नहीं हो सकता। कार्यकर्ताओं की निष्ठा पुकार-पुकारकर यह कहती प्रतीत होती थी कि उन सबने पूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामी के बताए हुए तत्त्व को जीवन में अच्छी तरह से उतारा है।

हमारे साथी यहाँ बम्बई में लोगों के पूछने पर महोत्सव का बयान करते हुए अंत में एक यह लाइन अवश्य कहते हैं कि ''हम तो स्वर्ग में जाकर आये हैं।''

तीर्थधाम सोनगढ (सौराष्ट्र) से ब्र. कंचनबेन लिखती हैं -

पंचकल्याणक महोत्सव हुए तो बहुत दिन बीत गये, पर उसका स्मरण और आनन्द तो मन में, भावों में अभी भी आता ही रहता है। इस बार मैं स्मारक भवन में सवा दो माह रही, वहाँ जो तत्त्वज्ञान का लाभ मिला है, वह अलौकिक था; मन की भावना पूर्णत: तृप्त हुई है। समयसार व प्रवचनसार शास्त्र पर जो युक्ति व तर्क से डॉ. साहब के प्रवचन होते थे, उनका और घोलन चलता ही रहता है। पंचकल्याणक प्रसंगों पर जो प्रवचन एक-एक दिन के सुने और यहाँ विशेषांक में बाँचते हैं तो खूब ही आनन्द आता है और ऐसा लगता है कि मानो पंचकल्याणक ही हो रहे हैं। प्रतिष्ठा भी अभूतपूर्व हुई और आनन्द भी अभूतपूर्व ही आता है। यहाँ के लोग व मुमुक्षुभाई जो वहाँ नहीं पहुँच पाये थे, हमसे पंचकल्याणक का वर्णन सुनने आते हैं और सुनकर बहुत प्रसन्न होते हैं।

पंचकल्याणक विशेषांक तो इतना सुन्दर बन पड़ा है कि वह तो हिन्दुस्तान के प्रत्येक व्यक्ति के पास पहुँचना चाहिए। उसकी इतनी प्रतियाँ छपवाइये कि जैन-अजैन सभी के पास पहुँचे। वह जैन-अजैन सभी को अच्छा लगेगा और सभी को बहुत आनन्द आयेगा।

समाचार सुन-सुनकर सबको टोडरमल स्मारक के प्रति अपार प्रेम उमड़ता है। जिन्होंने यह उत्सव नहीं देखा, उन्हें लगता है कि हम रह गये, अब ऐसा मौका कब आयेगा ?

त्रिमूर्ति विराजमान और तीन तीर्थधामों की रचना भी अद्भुत हुई है। इस कारण अब जयपुर भी सोनगढ के समान तीर्थधाम बन गया है। पूज्य गुरुदेवश्री की सातिशय पुण्य किरणें अभी भी जीवन्त हैं।

लन्दन से भगवानजी भाई कचराभाई शाह लिखते हैं -

हमारे परिवार के 22 व्यक्ति पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में पहुँचे थे। आज वे वापिस आ गये हैं। उन्होंने पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के सब समाचार सुनाये हैं। दो लाख जनता की उपस्थिति में सम्पन्न हुए जन्मकल्याणक महोत्सव की प्रशंसा करते वे थकते नहीं। आवास व भोजन की व्यवस्था अति उत्तम थी। आपने इस पंचकल्याणक के माध्यम से जैनधर्म की बहुत बड़ी प्रभावना की है। इस कार्य को करने वाले, करानेवाले एवं अनुमोदना करनेवाले का मनुष्य जीवन सफल है।

पूज्य गुरुदेवश्री जो आपके बारे में कहते थे कि पण्डित हुकमचंदजी से बहुत प्रभावना होगी। आपने उसे सत्य करके दिखा दिया। गुरुदेवश्री द्वारा दिये गये तत्त्व की जो प्रभावना आपके द्वारा हो रही, उसके लिये जितना कहा जाय कम है।

अग्रिम आमंत्रण पत्रिका

अग्रिम आमंत्रण पत्रिका

महोत्सव के पात्र एवं राशियाँ

1.	सौधर्म इन्द्र	: चर्चा द्वारा
2.	कुबेर	: चर्चा द्वारा
3.	ईशान इन्द्र	: चर्चा द्वारा
4.	सनत इन्द्र एवं महेन्द्र इन्द्र (2) 1 शेष	: चर्चा द्वारा
5.	5 से 12 नंबर तक के इन्द्र (8) 5 शेष	: 5 लाख (प्रत्येक)
6.	1 से 12 नंबर के प्रतीन्द्र (12) 7 शेष	: 2.5 लाख (प्रत्येक)
7.	माता–पिता	: चर्चा द्वारा
8.	यज्ञ नायक	: चर्चा द्वारा
9.	महामंत्री	: चर्चा द्वारा
10.	1 से 8 नंबर तक के राजा (8)	: 5 लाख (प्रत्येक)
11.	9 से 16 नंबर तक के राजा (8)	: 3 लाख (प्रत्येक)
12.	17 से 24 नंबर तक के राजा (8) 6 शेष	: 1.5 लाख (प्रत्येक)
13.	भूमीगोचरी एवं विद्याधर राजा (4–4) 2 शेष	: 31 हजार (प्रत्येक)
14.	राजा श्रेयांस एवं राजा सोम (आहारदान) 1 शेष	: चर्चा द्वारा
15.	महोत्सव के ध्वजारोहणकर्त्ता	: चर्चा द्वारा
16.	महोत्सव के मण्डप उद्घाटनकर्त्ता	: 5 लाख
17.	महोत्सव के मंच उद्घाटनकर्त्ता	: 2.5 लाख
18.	विधि अध्यक्ष विराजमानकर्त्ता	: आरक्षित
19.	यागमण्डल विधान के मुख्य मंगल कलश विराजमानकर्त्ता	: आरक्षित
20.	यागमण्डल विधान के शेष चार मंगल कलश विराजमानकर्ता (4) 1 शेष	: 11 हजार (प्रत्येक)
21.	यागमण्डल विधान के उद्घाटनकर्त्ता	: आरक्षित
22.	आदिनाथ विधान के मुख्य मंगल कलश विराजमानकर्त्ता	: आरक्षित
23.	आदिनाथ विधान के शेष चार मंगल कलश विराजमानकर्त्ता (4)	: 11 हजार (प्रत्येक)
24.	आदिनाथ विधान उद्घाटनकर्त्ता	: 31 हजार
25.	पाण्डाल में कुंदकुंद, टोडरमलजी, स्वामीजी के चित्र अनावरणकर्त्ता (3) 1 शेष	: 51 हजार (प्रत्येक)
26.	स्फटिक रत्न के चन्द्रप्रभ भगवान के भेंटकर्ता एवं विराजमानकर्त्ता	: आरक्षित
26.b	रत्नमयी 9 इंची पद्मप्रभ एवं सुपार्श्वनाथ भगवान के भेंटकर्त्ता एवं विराजमानकर्त्ता (2)	: चर्चा द्वारा
27.	91 इंची श्वेत पाषाण की खड्गासन बाहुबली एवं पार्श्वनाथ भगवान के भेंटकर्ता एवं विराजमानकर्त्ता (2)	: दोनो आरक्षित
28.	61इंची पाषाण के चतुर्मुख वासुपूज्य एवं नेमिनाथ भगवान के भेंटकर्ता एवं विराजमानकर्त्ता (8)6 शेष	: चर्चा द्वारा
29.	21 इंची पाषाण के विद्यमान 4 तीर्थंकर के भेंटकर्ता एवं विराजमानकर्त्ता (4) 2 शेष	: चर्चा द्वारा
30.	9 इंची धातु के विधिनायक आदिनाथ भगवान के भेंटकर्ता एवं विराजमानकर्त्ता	: आरक्षित
31.	सीमंधर जिनालय पर कलश आरोहणकर्त्ता	: 101–2501 के कूपन ड्रा से
32.	सीमंधर जिनालय पर ध्वजारोहणकर्त्ता	: आरक्षित
33.	चन्द्रप्रभ भगवान की वेदी पर कलशारोहण	: आरक्षित
34.	चन्द्रप्रभ भगवान की वेदी पर ध्वजारोहण	: आरक्षित
35.	पार्श्वनाथ बाहुबली, नेमीनाथ एवं वासुपूज्य भगवान की वेदी पर कलशारोहण (4)	: आरक्षित
36.	पार्श्वनाथ, बाहुबली, नेमीनाथ एवं वासुपूज्य भगवान की वेदी पर ध्वजारोहण (4)	: आरक्षित
37.	नवनिर्मित वेदी पर गिरनार, चम्पापुर के अनावरण कर्ता (2) 1 शेष	: आरक्षित
38.	त्रिमूर्ति जिनालय स्थित आदिनाथ–महावीर–शान्तिनाथ भगवान के शिखर का कलशारोहण(3)	: आरक्षित
39.	आदिनाथ–महावीर–शान्तिनाथ भगवान के शिखर का ध्वजारोहण (3)	: आरक्षित
40.	त्रिमूर्ति जिनालय स्थित वेदियो पर चरण चिन्ह विराजमानकर्त्ता, कलश आरोहणकर्त्ता एवं ध्वजारोहणकर्त्ता (24) 17 शेष	: 1 लाख 25 हजार (प्रत्येक)
41.	सीमंधर जिनालय में जिनवाणी विराजमानकर्त्ता	: आरक्षित
42.	जिनवाणी की वेदी पर कलश आरोहणकर्ता	: आरक्षित
43.	त्रिमूर्ति जिनालय पर जिनवाणी विराजमानकर्त्ता (4)	: आरक्षित
44.	त्रिमूर्ति जिनालय की जिनवाणी वेदी के पट अनावरणकर्त्ता (4)	: आरक्षित
45.	त्रिमूर्ति जिनालय की जिनवाणी वेदी पर कलश आरोहणकर्त्ता (4)	: आरक्षित
46.	त्रिमूर्ति जिनालय की जिनवाणी वेदी पर ध्वजा आरोहणकर्त्ता (4)	: आरक्षित
47.	सरस्वती निलय में कुन्दकुन्द के चित्र का अनावरण	: आरक्षित
48.	सरस्वती निलय में जिनवाणी की वेदियों पर पंच परमागम विराजमानकर्त्ता (5)	: आरक्षित
49.	कुंदकुंद/टोडरमलजी/स्वामीजी के पट आवरणकर्त्ता (3)	: आरक्षित
50.	सीमंधर जिनालय के द्वार उद्घाटन कर्त्ता	: 51 हजार (प्रत्येक)
51.	त्रिमूर्ति जिनालय के द्वार उद्घाटन कर्त्ता	: 5 लाख : चर्चा द्वारा

भोजन हेतू सहयोग राशि

दिनांक 21–22 एवं 27 फरवरी को प्रातः के भोजन प्रदाता (3) – 5 लाख रु. (प्रत्येक)
दिनांक 21–22 एवं 27 फरवरी को सायं के भोजन प्रदाता (3) – 3 लाख रु. (प्रत्येक)
दिनांक 23 एवं 26 फरवरी को प्रातः के भोजन प्रदाता (2) – चर्चाद्वारा (प्रत्येक)
दिनांक 23 एवं 26 फरवरी को सायं के भोजन प्रदाता (2) – 5 लाख रु. (प्रत्येक)
दिनांक 24 एवं 25 फरवरी को प्रातः के भोजन प्रदाता (2) – चर्चा द्वारा (प्रत्येक)
दिनांक 24 एवं 25 फरवरी को सायं के भोजन प्रदाता (2) – 5 लाख रु. (प्रत्येक)
भोजन सहयोगी – 1 लाख रु.

जन्माभिषेक कलश

1.	परमेष्ठी कलश	:	चर्चा द्वारा
2.	कुन्दकुन्द कलश	:	चर्चा द्वारा
3.	अमृतचन्द कलश	:	5 लाख
4.	टोडरमल कलश	:	1 लाख
5.	पंचरत्न कलश	:	51 हजार
6.	रत्नत्रय कलश	:	21 हजार
7.	रत्न कलश	:	11 हजार
8.	स्वर्ण कलश	:	5100 सौ
9.	रजत कलश	:	2100 सौ
10.	ताम्र कलश	:	1100 सौ

स्वीकृति पत्र

मैं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर –

1.....

2.....

3..... के लिए .....रुपये दान स्वरूप प्रदान करने की स्वीकृति प्रदान करता हूँ।

हस्ताक्षर दानदाता

पता .....

.....

फोन नं. ..... मोबाईल .....

ईमेल .....

श्री.....ने

.....

..... के लिए दान स्वरूप.....राशि प्रदान करने की स्वीकृति प्रदान की; एतदर्थ आपको हार्दिक धन्यवाद।

आप यह राशि पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के बचत खाता सं. 0247000100024619 पंजाब नेशनल बैंक शाखा, बापूनगर में अपनी सुविधानुसार जमा करा सकते हैं।

राशि जमा कराने के बाद उसकी सूचना जयपुर कार्यालय को ए-4, बापूनगर, जयपुर के पते पर अवश्य भेजें; ताकि जमाखर्च कर रसीद भिजवाई जा सके।

हस्ताक्षर प्राप्तकर्त्ता

आवास हेतु अग्रिम आरक्षण पत्र

मैं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर जयपुर आना चाहता हूँ।

मेरे साथ लगभग .....व्यक्ति जयपुर आयेंगे; जो दिनांक ..... से .....तक कार्यक्रम में सम्मिलित होंगे।

कृपया आवास की डिटेल मुझे निम्न पते पर भेजें।

नाम .....

पता .....

.....

.....

फोन नं. घर .....मोबाईल .....

ईमेल .....

नोट : स्वीकृति पत्र एवं अग्रिम आवास आरक्षण पत्र की फोटोस्टेट करके उसे भरकर जयपुर कार्यालय के पते पर भेजें।

जिनागम से संकलित बिखरे मोती –

...वे स्तुति के योग्य बन जाते हैं

प्रयश्यन्ति जिनं भक्ता पूजयन्ति स्तुवन्ति ये।
ते च दृश्याश्च पूज्याश्च भुयनत्रये ।।14।।

अर्थ : जो भव्य प्राणी भक्ति से जिन भगवान का दर्शन, पूजन और स्तुति किया करते हैं,वे तीनों लोकों में स्वयं ही दर्शन, पूजन और स्तुति के योग्य बन जाते हैं। **– पद्मनन्दिपंचविंशतिका, उपासकसंस्कार अधिकार, श्लोक 14 व अर्थ**

जिनप्रतिमा की महिमा

महिमा हजार दस सामान्य जु केवली की,
ताके सम तीर्थंकरदेवजी की मानिये।
तीर्थंकरदेव मिलें दसक हजार ऐसी,
महिमा महत एक प्रतिमा की जानिये।।

(अध्यात्म पंच संग्रह, उपदेश सिद्धांतरत्न, श्लोक 60)

जैनशासन ही किया गया है।

यद्दीयते जिनगृहाय धरादि किंचित् तत्तत्र संस्कृतिनिमित्तमिह प्ररूढम्।
आस्ते ततस्तदतिदीर्घतरं हि कालं जैनं च शासनमतः कृतमस्ति दातुः ।।

अर्थ : जिनालय के निमित्त जो कुछ पृथिवी आदि का दान किया जाता है, वह यहाँ धार्मिक संस्कृति का कारण होकर अंकुरित होता हुआ अतिशय दीर्घकाल तक रहता है। इसलिए उस दाता के द्वारा जैनशासन ही किया गया है। **– पद्मनन्दिपंचविंशतिका, देशव्रतोद्योतनम् अधिकार, श्लोक 51 व अर्थ**

वे धन्य हैं...

1. 'भाई ! जिनमन्दिर के लिए, वीतरागी शास्त्रों के लिए तथा धर्मात्मा-श्रावक-साधर्मी आदि सुपात्रों के लिए जिसकी लक्ष्मी खर्च हो, वो धन्य है।'

2. जो जीव धर्म के प्रेम को स्थिर रखकर-जिनमन्दिर आदि बनवाते हैं, वे धन्य हैं। स्तवन में भी आता है कि –

चैत्यालय जो करे, धन्य सो श्रावक कहिये।
तामें प्रतिमा धरें, धन्य सो भी सरदहिये।।

3. 'जो जीव भक्ति से वीतराग जिनबिम्ब और जिनप्रतिमा कराता है, उसके पुण्य की महिमा वाणी से कैसे कही जा सकती है ?'

4. देखिये, नग्न-दिगम्बर सन्त, वन में बसनेवाले और स्वरूप की साधना में छठे-सातवें गुणस्थान में झूलनेवाले मुनिराज को भी भगवान के प्रति कैसे भाव उल्लसित होते हैं ? वे कहते हैं कि छोटा सा मन्दिर बनावे और उसमें जौ के दाने जितनी जिनप्रतिमा की स्थापना करें, उस श्रावक के पुण्य की अपूर्व महिमा ! अर्थात् उसे वीतरागभाव की जो रुचि हुई है, उसके महान फल की क्या बात ! प्रतिमा चाहे छोटी हो; परन्तु वह वीतरागता का प्रतीक है ना ! इसकी स्थापना करने वाले को वीतराग का आदर है, उसका फल महान है।

– पद्मनन्दिपंचविंशतिका के देशव्रतोद्योतन अधिकार पर पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रवचनांश; श्रावक धर्म प्रकाश, पृष्ठ 106; 129-130; 135 एवं 139

2 सितम्बर 2011, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J.P.C / FN-61 / 2009-11

सुख किनकूं होय है

हे गुरो ! यह जीवन के समुदाय कूं सुख किस पुण्य तैं होय ? तब गुरु कही – जिन जीवन नैं तीर्थंकर के गर्भ उत्सव तथा देवन के किये जन्मोत्सव, तप उत्सव, ज्ञान उत्सव, निर्वाण उत्सव – इन पाँच कल्याण के बड़े उत्सव, अनेक देव सहित, इन्द्र-शची कौं करते देख तथा सुनि, जिन जीवन नैं इकट्ठे होय, अनुमोदना करी होय तथा इन्द्र महाराज इन्द्राणी सहित अनेक देव लेय, नन्दीश्वरजी के उत्सव कौं जाते देख तथा सुनि, परम सुख कूं पाय, अनेक जीवन के समुदाय ने अनुमोदना करि पुण्य बांध्या होय तथा बड़ा संघ सिद्धक्षेत्र की यात्रा कौं जाता देख, ताका जय-जयकार उत्सव देख, अनेक जीवन नैं अनुमोदना करि, पुण्य बन्ध किया होय तथा च्यार प्रकार संघ की वीतरागता देख, अनेक जीवों ने सुख पाया होय तथा समोशरण की महिमा देख तथा बड़ी पूजा-विधान-प्रतिष्ठा तिनके उत्सव देख तथा शास्त्रन तैं सुनि, अनेक जीवन कौं अनुमोदना उपजी होय इत्यादिक शुभ कार्यन में अनुमोदना करि, बहुत जीवन नै समुच्चय पुण्य बन्ध किया होय। तिनकूं समुदाय ही सुख होय है।

– श्री सुदृष्टितरंगिणी (पण्डित टेकचंदजी), पृष्ठ 426

शोक समाचार

1. भीलवाड़ा निवासी श्री महाचंदजी सेठी के सुपुत्र चि. राकेश सेठी का दिनांक 23 अगस्त को 52 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया है। ज्ञातव्य है कि आप कुछ समय से अस्वस्थ भी थे। आपको गुरुदेवश्री द्वारा उद्घाटित तत्त्वज्ञान के प्रति गहरी आस्था थी और निरन्तर तत्त्वाभ्यास में संलग्न रहते थे।

2. जयपुर (राज.) निवासी श्री मूलचन्दजी छाबड़ा मारौठ वालों की माताजी का दिनांक 23 अगस्त को देहावसान हो गया है। आप स्मारक भवन में चलने वाले दैनिक स्वाध्याय का लाभ लिया करती थीं। ज्ञातव्य है कि श्री मूलचंदजी छाबड़ा जयपुर में होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के उपकोषाध्यक्ष भी हैं।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों – यही भावना है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

पंचकल्याणक महोत्सव

– राजमल पवैया

आओ भव्यो आओ भव्यो हिल-मिलकर आ हर्षाओ।
पंचकल्याणक महोत्सव में आ श्री जिनवर के गुण गाओ।।
गर्भ कल्याण महोत्सव देखो, रत्नों की वर्षा भी देखो।
सोलह स्वप्नों का फल सुनकर अन्तर मन में हर्षाओ।। पंचकल्याण.।।
प्रभु का जन्म कल्याण देख लो गिरि सुमेरु अभिषेक देख लो।
नृत्यगान इन्द्रों का देखो, नाचो, गाओ, हर्षाओ। पंचकल्याण.।।
जिनवर को मुनि होते निरखो, संयम भाव स्वयं का परखो।
तप कल्याण मना, अहार दे मुनि प्रभु की जय जय गाओ।। पंचकल्याण.।।
केवलज्ञान कल्याणक देखो, समवशरण की रचना देखो।
द्वादश सभा मध्य जा बैठो, आत्मज्ञान वैभव पाओ।। पंचकल्याण.।।
श्री जिनवर का मोक्ष कल्याणक, परमशान्ति शिव सुख का दायक।
सिद्ध शिला के दर्शन कर लो, महा मोक्ष मंगल गाओ।। पंचकल्याण.।।
पाँचों कल्याणक पूजन कर, भक्तिभाव से प्रभु दर्शन कर।
नाचो, गाओ हर्ष मनाओ, शुद्ध भाव उर में लाओ।। पंचकल्याण.।।
पाप पुण्य के भाव विनाशो, शुद्ध भाव ही हृदय प्रकाशो।
श्रेष्ठ पंच कल्याणक पूजो परमानंद हृदय पाओ।। पंचकल्याण.।।

आदिनाथ पंचकल्याणक के अवसर पर –

धार्मिक हाउजी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 27 अगस्त को श्री टोडरमल स्मारक महिला मंडल द्वारा श्रीमती सुशीला जैन के निर्देशन में धार्मिक हाउजी का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में जयपुर के सभी महिला मण्डलों के दो-दो सदस्याओं को आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम में श्रीमती मंजु सेठी, श्रीमती रेखा रांवका एवं श्रीमती आशा दीवान मुख्य अतिथि के रूप में मंचासीन थीं।

कार्यक्रम का संचालन श्रीमती स्तुति जैन एवं मंगलाचरण श्रीमती ज्योति सेठी ने किया।

प्रकाशन तिथि : 28 अगस्त 2011

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127